९. स्थायी जीवन और नगरीय संस्कृति

९.१ धातु का उपयोग

९.२ चाक पर बनाए गए बरतन

९.३ व्यापार और परिवहन

९.४ नगरों का उदय और लिपि

९.५ नगरीय समाजव्यवस्था

९.१ धातु का उपयोग

बल्गेरिया की दफन भूमि में पाई गईं सोने की प्राचीन वस्तुएँ

मनुष्य ने सबसे पहले किस धातु का उपयोग किया; इसके बारे में हमारे मन में बड़ा कुतूहल रहता है । यूरोप के वस्तु संग्रहालय में इकट्ठी प्राचीन वस्तुओं का वर्गीकरण करने के लिए थॉमसन नामक अध्येता ने 'त्रियुग पद्धति' नामक पद्धति का उपयोग किया ।

१. पत्थरों के हथियार – अश्म युग

२. तांबे के हथियार एवं अन्य वस्तुएँ – ताम्र युग

३. लोहे के हथियार एवं अन्य वस्तुएँ – लौह युग

यह वर्गीकरण निश्चित करते समय पत्थर के हथियार पूर्व कालखंड के, तांबे के हथियार और अन्य वस्तुओं का कालखंड पूर्व कालखंड के बाद का और लोहे के हथियार एवं अन्य वस्तुओं का कालखंड तांबे के कालखंड के बाद का; यह थॉमसन ने प्रमाणसहित सिद्ध कर दिखाया । इसी के आधार पर कालखंडों को क्रमशः अश्म युग, ताम्र युग और लौह युग नाम दिए गए । अतः सामान्यतः एक ऐसी मान्यता हो गई कि सबसे पहले तांबा धातु का उपयोग किया गया ।

परंतु प्रत्यक्ष में सबसे पहले स्वर्ण धातु उपयोग में लाई गई । स्वर्ण धातु प्राकृतिक रूप से बहुत नरम और लचीली होती है । इस कारण उसका उपयोग हथियार एवं औजार बनाने के लिए नहीं किया जा सकता था । स्वर्ण के पश्चात मनुष्य को ऐसी ही अन्य एक धातु की खोज हुई । इस धातु से मनुष्य के लिए हथियार और औजार बनाना संभव हुआ । वह धातु 'तांबा' है । जिस कालखंड में तांबे का उपयोग प्रारंभ हुआ; उस कालखंड को 'ताम्र युग' कहा जाता है ।

९.२ चाक पर बनाए गए बरतन

ताम्र युग नव-नवीन आविष्कारों और तेजी से होने वाले परिवर्तनों का युग है । इसी कालखंड में एक बहुत महत्त्वपूर्ण आविष्कार हुआ । यह आविष्कार पहिये का था । सामान्यतः यह मान लिया जाता है कि सबसे पहले चाक का उपयोग मिट्टी के बरतन बनाने वालों ने किया । कालांतर में पहिये का उपयोग वाहनों के लिए किया जाने लगा होगा ।

हाथों से बरतन बनाते समय उसे घुमाने में आसानी हो इसलिए किसी समय घूमती तख्ती का उपयोग करना प्रारंभ हुआ होगा । एक हाथ से बरतन को आकार देते हुए दूसरे हाथ से तख्ती को घुमाया जाता था । इस पद्धति में परिवर्तन होते-होते पहिया विकसित हुआ । अभी-अभी तक पूर्वोत्तर भारत में आदिवासी स्त्रियाँ बरतन को आकार देने के लिए घूमती तख्ती का उपयोग करती थीं ।

मिट्टी के बरतन बनाने वाले चाक में बिठाया गया नुकीला उपल । चाक उसपर जोर से घूमता है । उस नुकीले पत्थर को 'खूँटी का पत्थर' कहते हैं ।

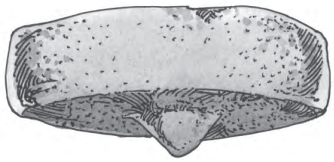

बरतन बनाने के लिए तख्ती का उपयोग करने वाला प्राचीन इजिप्त का मनुष्य

९.३ व्यापार और यातायात

चाक पर बरतन बनाना प्रारंभ होने के बाद उनका उत्पादन बड़ी मात्रा में करना संभव हुआ । इस कालखंड में सुडौल और सुंदर नक्काशीवाले रंगीन बरतन बनाए जाने लगे । ये बरतन और अन्य विविध वस्तुएँ बनाने वाले कुशल श्रमिक कार्य की सुविधा की दृष्टि से गाँव में किसी एक स्थान पर रहने लगे । हम यह कह सकते हैं कि गाँव में कुशल श्रमिकों की बस्ती और वस्तुओं के उत्पादन केंद्र का एक विशिष्ट क्षेत्र ही निर्मित हुआ परंतु यह उन्हीं गाँवों में हुआ; जिन गाँवों में कच्चा माल सहजता से पाया जाता था और जो गाँव व्यापार की दृष्टि से अधिक सुविधाजनक थे । अतः उन गाँवों का विस्तार हुआ ।

वस्तुओं का उत्पादन बड़ी मात्रा में प्रारंभ होने पर व्यापार में भी वृद्धि हुई । इस कारण परिवहन प्रणाली में परिवर्तन होना आवश्यक था । इसी कालखंड में पहियों की गाड़ियों का उपयोग प्रारंभ हुआ ।

९.४ नगरों का उदय और लिपि

दूर तक फैला हुआ व्यापार, माल का द्रुतगति से परिवहन और बड़ी मात्रा में उत्पादन करने वाले उत्पादन केंद्रों के कारण अनेक प्रकार के कार्य करने वाले श्रमिक एक स्थान पर आए । नगरों का निर्माण हुआ । बढ़ा हुआ व्यापार और उत्पादन का स्थायी रूप से हिसाब-किताब रखना आवश्यक हुआ । हिसाब-किताब रखने के लिए सांकेतिक चिह्नों और प्रतीकों का उपयोग पूर्व कालखंड में भी होता ही था ।

पहियों पर चलने वाली गाड़ियों का सर्वप्रथम उपयोग मेसोपोटेमिया में किया गया ।

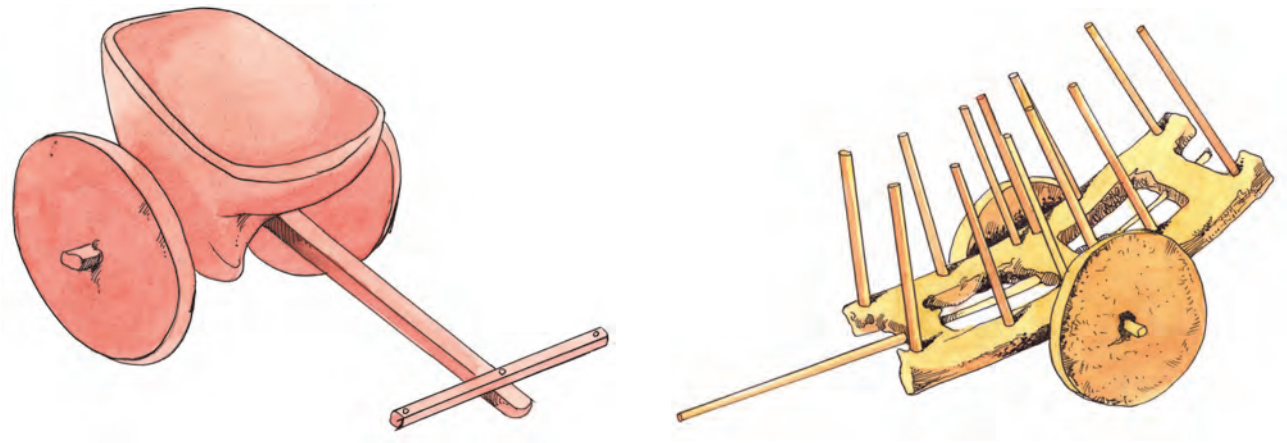

हड़प्पा संस्कृति (सिंधु संस्कृति) भारतीय उपमहाद्वीप की सर्वाधिक प्राचीन नगरीय संस्कृति थी ।
इस संस्कृति के पहियोंवाले खिलौने

सांकेतिक चिह्नयुक्त खपड़े बड़ी संख्या में पाए जाते हैं । व्यापार और उत्पादन में हुई वृद्धि और हिसाब-किताब रखने का बढ़ता कार्य जैसे कारणों से पूर्व समय से चले आ रहे

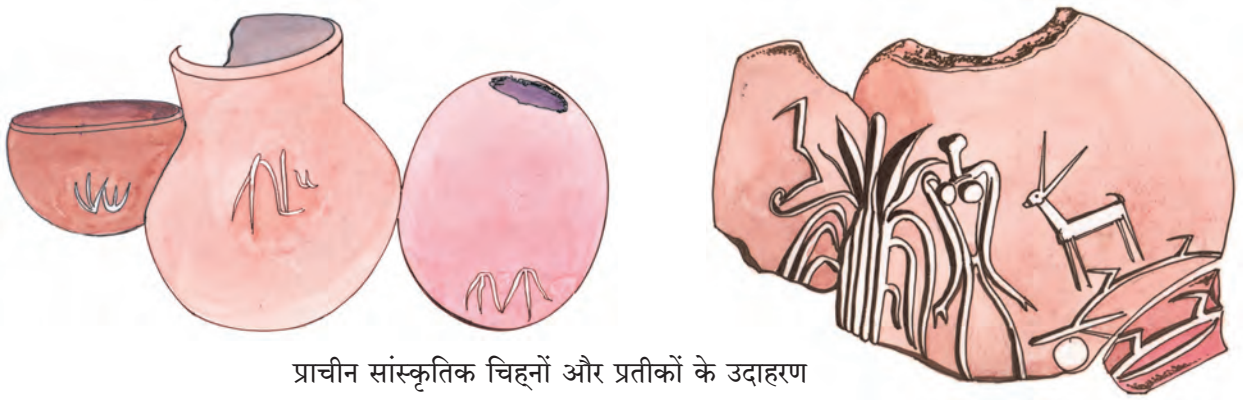

प्राचीन सांस्कृतिक चिह्नों और प्रतीकों के उदाहरण

सांकेतिक चिह्नों और प्रतीकों में सुधार किए गए । उन्हें संस्कारित किया गया। इस प्रकार प्रत्येक संस्कृति की अपनी-अपनी लिपि उत्पन्न हुई ।

९.५ नगरीय समाज व्यवस्था

विश्वभर में प्राचीन नगरीय संस्कृति का उदय और विकास हुआ और इसका प्रमुख कारण व्यापार में हुई समृद्धि है; फिर भी उस नगरीय संस्कृति की नींव नवाश्म युग की कृषि संस्कृति पर आधारित थी । कृषि संस्कृति में जो श्रद्धाएँ और मान्यताएँ रूढ़ हुई थीं; वे नगरीय संस्कृति में भी अबाधित रहीं । व्यापार समृद्ध होने के कारण संपन्न हुए नगरों में रूढ़ हुई श्रद्धाओं पर आधारित सामूहिक आचरण एवं पर्वों को अधिक महत्त्व प्राप्त हुआ । अनेक नगरों में अतिभव्य मंदिरों का निर्माण करवाया गया । उन नगरों की शासन व्यवस्था के अधिकार भी मंदिर प्रमुख के नियंत्रण में आ गए । कालांतर में मंदिर का प्रमुखपद एवं राज्यपद एक ही व्यक्ति के पास आ गए । विश्व की प्राचीन नगरीय संस्कृतियों का यह प्रारंभ था । इन संस्कृतियों की विस्तृत जानकारी हम अगले पाठ में प्राप्त करेंगे ।

स्वाध्याय

१. निम्न गोल में वस्तुओं के कालखंड के तीन समूह ढूँढ़ो और वे संबंधित वाक्यों के आगे लिखो ।

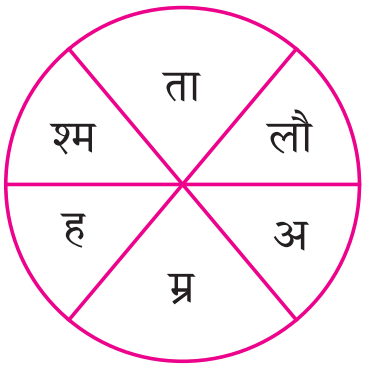

(अ) पत्थर के हथियार : ----- युग ।

(आ) तांबे के हथियार एवं अन्य वस्तुएँ : ----- युग ।

(इ) लोहे के हथियार एवं अन्य वस्तुएँ : ----- युग ।

२. निम्न घटक कालखंड के अनुसार उचित क्रम से लिखो :

(अ) (१) तांबा (२) स्वर्ण (३) लौह

१)------ २) ------ ३) ------

(आ) (१) ताम्र युग (२) लौह युग (३) अश्म युग

१)------ २) ------ ३) ------

३. निम्न घटनाओं के परिणाम लिखो :

(अ) तांबा धातु का आविष्कार : -------

(आ) पहिये (चाक) का आविष्कार : ----

(इ) लिपि का ज्ञान : --------

४. टिप्पणियाँ लिखो :

(अ) धातु का उपयोग

(आ) नगरीय समाज व्यवस्था

उपक्रम :

(अ) तुम अपने घर की विभिन्न वस्तुओं की सूची बनाओ तथा लिखो कि वे किन धातुओं से बनी हैं ।

(आ) विविध भाषाओं के अनुच्छेद प्राप्त करो । उन्हें कॉपी में चिपकाओ और उन अनुच्छेदों की विभिन्न लिपियाँ देखकर तुम्हें क्या लगता है; वह लिखो ।

क्या तुम यह जानते हो ?

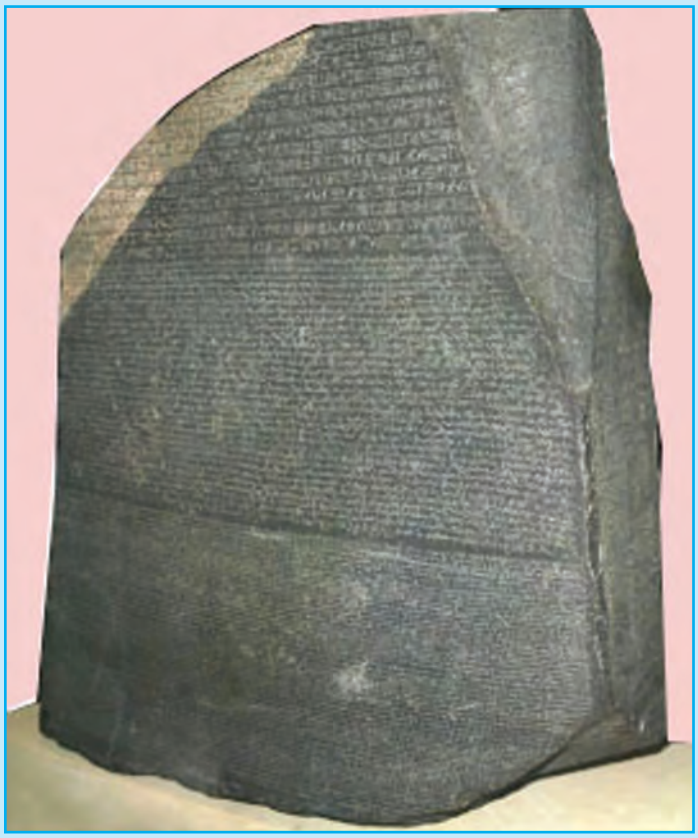

(१)

(२)

(३)

रोजेटा शिलालेख

रोजेटा स्टोन नाम से परिचित शिलालेख की खोज १७९९ ई. में हुई । इस शिलालेख का पत्थर टूटा हुआ होने के कारण उसपर मूल शिलालेख का केवल एक हिस्सा बचा है । शिलालेख इजिप्शियन भाषा में है । इस समय यह शिलालेख लंदन के ब्रिटिश म्यूजियम में रखा हुआ है । पहली दृष्टि में देखने पर ऐसा लगता है कि पत्थर पर तीन भागों में तीन अलग-अलग लेख उकेरे गए हैं परंतु वास्तव में वह एक ही लेख है और तीन अलग-अलग लिपियों में उकेरा गया है । सबसे ऊपर की लिपि प्राचीन इजिप्त की चित्रलिपि है । इस लिपि को 'हाइरोग्लिफ्स' (देवलिपि) कहते हैं । बीचवाली लिपि का दैनिक उपयोग में समावेश हुआ है । यह लिपि 'डेमोटिक' (दस्तावेज लिखने हेतु उपयोग में लाई जानेवाली) लिपि नाम से जानी जाती है । यह लिपि इजिप्त की प्राचीन चित्रलिपि से बनी है । तीसरी लिपि 'ग्रीक' लिपि है ।

इस लेख में इजिप्त में टॉलेमी (पंचम) नामक राजा के गद्दी पर बैठने की घोषणा की गई है । इजिप्त के ऐतिहासिक साधन के रूप में इस शिलालेख का विशेष महत्त्व है क्योंकि इन तीन लिपियों में उकेरे गए इस लेख के फलस्वरूप विस्मृत प्राचीन इजिप्त की चित्रलिपि को पढ़ना संभव हुआ है । इस लेख की ग्रीक लिपि के आधार पर डेमोटिक लिपि का 'टॉलमिस' यह शब्द पढ़ना संभव हुआ । कालांतर में जाँ फ्रांस्वा शॉम्पोलियान नाम के एक फ्रेंच शिक्षक को यह लिपि पढ़ना संभव हुआ । 'टॉलमिस' शब्द को पढ़ पाने के कारण इजिप्त के शिलालेखों में उल्लिखित विदेशी नामों को पढ़ना संभव है; यह शॉम्पोलियान के ध्यान में आया । उसने विदेशी नाम पढ़कर; उनके आधार पर चित्रलिपि के वर्णों की सूची बनाई । इस प्रकार शॉम्पोलियान को प्राचीन इजिप्त की उस चित्रलिपि को सफलतापूर्वक पढ़ना संभव हुआ; जो विस्मृत हो गई थी ।

तांबे का उपयोग लगभग ७००० वर्ष पूर्व से किया जाता था; इसका प्रमाण मिलता है । जिन प्रदेशों में तांबा दुर्लभ था; वहाँ तांबे का बड़ी मात्रा में उपयोग करना संभव नहीं था । अतः तांबे का उपयोग किस प्रकार किया जाता है; यह मालूम होने पर भी वहाँ बड़ी मात्रा में पत्थर के हथियारों, औजारों का उपयोग होता रहा । ऐसे स्थानों के उत्खनन में तांबे की वस्तुएँ पाई गईं लेकिन वे बहुत कम मात्रा में थीं । अतः ऐसे स्थानों को 'ताम्रयुगीन' न कहकर 'ताम्रपाषाणयुगीन' स्थान कहा जाता है ।

तांबा स्वर्ण की तुलना में कठोर होता है; फिर भी उससे वस्तुएँ बनाने की दृष्टि से वह नरम होता है । उसमें जस्ता धातु मिलाने पर उसे पर्याप्त कठोरता प्राप्त होती है । तांबा और राँगा की मिश्र धातु को 'काँसा/कांस्य' कहते हैं । नवाश्म युग का मनुष्य वस्तुएँ बनाने के लिए काँसा धातु का उपयोग करने लगा । अतः इस कालखंड को 'कांस्य युग' भी कहते हैं । मिश्र धातु बनाने के लिए धातु को गलाना पड़ता है । जस्ता और राँगा धातुओं को किस प्रकार गलाया जाता है; इसका ज्ञान मनुष्य को काँसा बनाने से लगभग १००० वर्ष पूर्व से था ।

लोटा

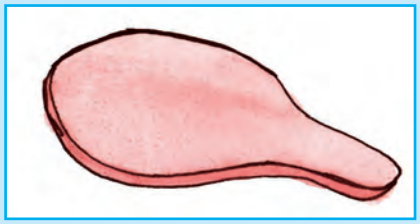

आईना

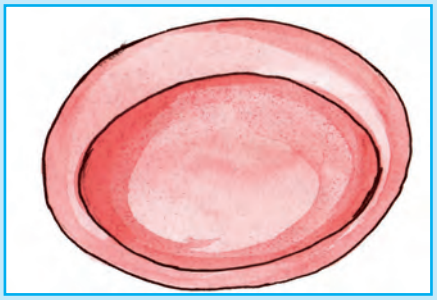

थाली

तांबे की वस्तुएँ - सिंधु संस्कृति

❑❑❑